Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 4, October-2023, ISSN 2230-7540

21 वीं शताब्दी शिक्षक- शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियां- एक अध्ययन

गौतम*

सहा. प्रधयापक, लक्ष्मी नारायण,महाविद्यालय,भगवानपुर,वैशाली

***सार** - यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में 21वीं सदी के शिक्षकों के सामने आने वाली बहुमुखी चुनौतियों पर प्रकाश डालता है। तेजी से तकनीकी प्रगति, बदलती छात्र जनसांख्यिकी और शैक्षणिक दृष्टिकोण विकसित करने वाले युग में, शिक्षकों को बाधाओं का एक अनूठा समूह सामना करना पड़ता है। इस शोध का उद्देश्य इन चुनौतियों की पहचान करना और उनका विश्लेषण करना, शिक्षकों की उभरती भूमिका, नवीन शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता और व्यावसायिक विकास के महत्व पर प्रकाश डालना है। इन चुनौतियों को समझकर और उनका समाधान करके, यह अध्ययन 21वीं सदी में शिक्षण प्रथाओं और शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में योगदान देना चाहता है।*

***खोजशब्द** - शिक्षक, छात्र*

----------X----------

परिचय

आज विश्व का हर देश हर संभव तरीके से विकसित होने का प्रयास कर रहा है। हर देश चाहे वह विकसित हो या विकासशील, दोनों ही वैज्ञानिक तरीके से प्रगति करना चाहते हैं। वे विकास के शिखर पर पहुंचना चाहते हैं. लेकिन सभी देश यह बेहतर जानते हैं कि चाहे गरीबी की समस्या हो या भ्रष्टाचार, अशिक्षा की समस्या को दूर नहीं किया जा सकता। हमारे सभी नेता और शिक्षक इस समस्या से निजात पाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन ऐसा करने में वे असमर्थ हैं। और यह सब हमारी बीमार और अपर्याप्त शिक्षा नीतियों के कारण हो रहा है। और जब हमारी नीतियां विफल हो जाती हैं, तो हम दूसरों को कोसते हैं जैसे जनसंख्या हमारे प्रयासों पर पानी फेर रही है और भ्रष्टाचार हमारे सिस्टम को खा गया है आदि... इस संदर्भ में जब हम शिक्षा और इसके समसामयिक मुद्दों के बारे में बात करते हैं। हमें सबसे पहले इस बात पर चर्चा करनी चाहिए कि समकालीन विश्व में हमारे सामने क्या चुनौतियाँ और मुद्दे हैं और इससे पहले हमें इस बात पर चर्चा करनी चाहिए कि हमारी शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य क्या हैं और फिर हमें इसका कारण खोजना चाहिए। हमारी शिक्षा का पहला उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास करना था, लेकिन यह स्पष्ट है कि सर्वांगीण विकास एक दिवास्वप्न के समान है क्योंकि वर्तमान प्रणाली बच्चे में एक भी क्षमता विकसित नहीं कर पा रही है।[1]

21वीं सदी ने शिक्षा के क्षेत्र में एक गतिशील और निरंतर विकसित होने वाले परिदृश्य की शुरुआत की है, जिससे शिक्षकों की भूमिका और जिम्मेदारियों में एक आदर्श बदलाव की आवश्यकता है। आज शिक्षकों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जो पिछली पीढ़ियों में काफी हद तक अकल्पनीय थीं। प्रौद्योगिकी के प्रसार, बदलती जनसांख्यिकी और बदलते शैक्षणिक तरीकों के साथ, शिक्षकों को तेजी से बदलते शैक्षणिक माहौल के अनुकूल होना चाहिए। इस अध्ययन का उद्देश्य 21वीं सदी के शिक्षकों के सामने आने वाली बहुमुखी चुनौतियों का पता लगाना और जांचना है, जिसमें नवीन शिक्षण दृष्टिकोण, चल रहे व्यावसायिक विकास और शिक्षा के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की बढ़ती भूमिका की गहरी समझ पर जोर दिया गया है। इन चुनौतियों का समाधान करके, हम शिक्षकों को आज के छात्रों की विविध और जटिल जरूरतों को पूरा करने के लिए बेहतर ढंग से

www.ignited.in

तैयार कर सकते हैं और 21वीं सदी में शिक्षा की निरंतर प्रगति में योगदान कर सकते हैं।[2]

21वीं सदी की शिक्षा में प्रौद्योगिकी का प्रभाव

1. शिक्षक 'सभी ज्ञान के स्रोत' के बजाय सीखने के मार्गदर्शक बन जाते हैं।
2. एक अधिक लचीला पाठ्यक्रम और समय सारिणी जो छात्रों को किसी भी समय, किसी भी स्थान पर सीखने की अनुमति देती है।
3. ज्ञान आधारित शिक्षण के बजाय कौशल आधारित शिक्षा।
4. कक्षा से बाहर विभिन्न स्थानों पर जाकर सीखना।
5. स्वतंत्र शिक्षा पर अधिक जोर जो स्कूल के बजाय शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप हो।
6. एक मिश्रित शिक्षण दृष्टिकोण जिसमें एकीकृत शिक्षण, पूछताछ आधारित शिक्षा, परियोजना कार्य, खोज आधारित शिक्षा या समस्या आधारित शिक्षा शामिल है।

शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग के लाभ

1. शैक्षणिक जानकारी तक आसान पहुंच,
2. आसानी से सीखने की क्षमता जो कक्षाओं में दृश्य शिक्षण के उपयोग से उत्पन्न होती है, जिसे स्मार्ट व्हाइट बोर्ड जैसे तकनीकी उपकरणों द्वारा सुगम बनाया जाता है।
3. कहीं से भी सीखने की क्षमता. 4. सीखने की प्रभावशीलता में सुधार।
4. पूर्णकालिक छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए जानकारी तक अधिक पहुंच।
5. नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धी होने के लिए स्नातकों को कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी कौशल की आवश्यकता होती है
6. उत्पादकता में वृद्धि, ई. जी., अधिक कुशल प्रशासन, होमवर्क की कंप्यूटर ग्रेडिंग।
7. प्रौद्योगिकी शिक्षा और शिक्षार्थी को अधिक संवादात्मक बनाती है

साहित्य की समीक्षा

लिंडा ला वेले (2020) के लिए जेईटी के हमारे पहले अंक में कागजात का एक सेट शामिल है जो शिक्षक शिक्षा के लिए वर्तमान चुनौतियों की एक श्रृंखला पर प्रकाश डालता है। जेईटी के पिछले खंड की तरह, हमारे पहले तीन पेपर शिक्षक भर्ती और प्रतिधारण के कांटेदार मुद्दे और शिक्षक शिक्षा की केंद्रीय भूमिका पर लौटते हैं जिसे अब एक वैश्विक संकट माना जाना चाहिए। एक अतिरिक्त भाषा के रूप में अंग्रेजी के लिए शिक्षक शिक्षा के लेंस के माध्यम से एक तुर्की परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, जिसका तुर्की में एक विशिष्ट सामाजिक स्तरीकरण है। वे एक ऐसी स्थिति का वर्णन करते हैं जिसे 'शैक्षिक अलगाव' (ओवेनडेन-होप और पैसी 2019) कहा गया है,[1]

जॉन जोसेफ लुपिनाची (2020) यह लेख नेतृत्व की व्यक्तिगत रूप से केंद्रित धारणाओं की आलोचना करता है, इसके बजाय एक पारिस्थितिक वैचारिक ढांचे की पेशकश करता है जो पश्चिमी औद्योगिक संस्कृति में नेताओं के सोचने, कार्य करने के महत्व को पहचानने के उद्देश्य से सभी स्तरों पर शिक्षा का समर्थन करने के लिए काम करता है। इस दृष्टिकोण से, लेख यह पता लगाता है कि सामाजिक न्याय और स्थिरता के जटिल अंतर्संबंधों से उभरने वाली 21वीं सदी की चुनौतियों को एडीडी कार्यक्रम विकास, सहायक कार्यक्रम संरचनाओं और शिक्षक शिक्षा और के-12 स्कूल नेतृत्व को प्रभावित करने वाली पाठ्यक्रम सामग्री के माध्यम से कैसे संबोधित किया जा सकता है। [2]

कार्यप्रणाली

भारत अपनी 1.2 अरब की आबादी के बीच उल्लेखनीय विविधता वाला सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जो दुनिया की आबादी का लगभग 17% है। भारत की लगभग 70% जनसंख्या ग्रामीण है। वयस्क साक्षरता दर लगभग 60% है और महिलाओं और अल्पसंख्यकों में यह काफी कम है। भारत में शिक्षा में सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी संस्थान शामिल हैं जिनमें से लगभग 40% सरकारी हैं। 1.5% की जनसंख्या वृद्धि दर के साथ, शिक्षा प्रणाली पर किफायती मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और साक्षरता दर में सुधार करने का जबरदस्त दबाव है।

भारत में शिक्षा को निम्नलिखित प्राथमिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, हम शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों के बारे में अध्ययन कर रहे हैं।

डेटा विश्लेषण

शीर्षतम चुनौतियाँ

- **युवाओं की संतुष्टि नहीं**

समकालीन भारतीय शिक्षा के प्रमुख मुद्दे एवं चुनौतियाँ इस प्रकार हैं। सबसे बड़ा मुद्दा युवाओं का असंतोष है. शिक्षक अपने ज्ञान और शिक्षण के तरीकों से युवाओं को अपने ज्ञान के स्तर से संतुष्ट नहीं कर पा रहे हैं और शिक्षा प्रणाली संतुष्टि नहीं दे पा रही है और इस कारण युवा शिक्षक और व्यवस्था के खिलाफ खड़ा है'[3]

- **अनुशासन**

दूसरा कारण है स्कूल-कॉलेजों में अनुशासन. इसका कारण हमारे तथाकथित नेता और समाज के ठेकेदार बताते हैं। जो अपने फायदे के लिए समय-समय पर युवाओं को भड़काते रहते हैं.

- **बेरोजगारी**

तीसरी हो सकती है बेरोजगारी की समस्या. हमारे कुछ शिक्षक सोचते हैं कि अब यह समस्या शिक्षा प्रणाली के लिए एक मुद्दा है, लेकिन जब कोई युवा स्नातक या स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के बाद भी अपने भाई या बहन को बेरोजगार देखता है, तो वे बेरोजगार हैं, यह एक विद्रोह को जन्म देता है।

- **गरीबी**

गरीबी अगला मुद्दा या चुनौती हो सकती है जिसका हमारी शिक्षा प्रणाली को सामना करना पड़ रहा है। आजकल शिक्षा प्राप्त करने की लागत बहुत अधिक है इसलिए हमारे समाज के गरीब लोग शिक्षा प्राप्त करने में स्वयं को खोया हुआ पाते हैं.[4]

- **राजनीतिक अनिच्छा**

राजनीतिक अनिच्छा भी हमारी शिक्षा व्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती है। राजनेता सोचते हैं कि उन्हें अपनी इच्छाएं पूरी करने के लिए पांच साल मिले हैं. शिक्षा के मामले यूं ही लंबित रखे गये हैं.

- **जातिवाद**

जातिवाद निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के बीच एक दीवार पैदा करता है। एक बार मैं दूसरे कॉलेज में था, वहां मैंने एक शिक्षक को छात्रों से फीस लेते देखा (आप कहेंगे कि इसमें आश्चर्य की क्या बात है, ज्यादातर स्कूलों में शिक्षक छात्रों से शुल्क लेता है)। लेकिन जब एक छात्र फीस देने आया तो शिक्षक ने रकम टेबल पर रखने को कहा. उस लड़के ने रकम मेज पर रखी और चला गया।

- **महँगाई**

महंगाई शिक्षा व्यवस्था के लिए एक और चुनौती है। कॉलेजों और स्कूलों की फीस दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, पब्लिक स्कूल हर सत्र में अपनी फीस संरचना बढ़ा रहे हैं, लेकिन मजदूर की मजदूरी उसी गति से नहीं बढ़ रही है। इसलिए गरीब लोग अपने बच्चों को उन स्कूलों में दाखिला दिलाने में खुद को असमर्थ पाते हैं। और सरकारी स्कूल पब्लिक स्कूलों या सीबीएसई स्कूलों से प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं।[5]

- **भ्रष्टाचार**

भ्रष्टाचार जो सभी सरकारी अधिकारियों और पूरे सिस्टम का अधिकार बन गया है। कई स्कूलों में पाया गया कि जो फंड स्कूल को भेजा जा रहा था वह रास्ते में ही गायब हो गया।

- **शिक्षा का निजीकरण**

शिक्षा का निजीकरण बड़ा मुद्दा है. कुछ विद्वान लोगों का कहना है कि सरकारी अधिकारी वेतन तो अधिक लेते हैं लेकिन उसके अनुरूप काम नहीं करते। लेकिन निजी संस्थानों में शिक्षकों की स्थिति बेहद नाजुक रहती है जो शिक्षा व्यवस्था के लिए ठीक नहीं है।

- **शिक्षकों की अनभिज्ञता**

शिक्षण की विधियों एवं तकनीकों के प्रति शिक्षकों की अनभिज्ञता। यहां तक कि उन्हें भी इनमें कोई दिलचस्पी नहीं है. शिक्षण एक ऐसा पेशा है जिसमें एक शिक्षक को दिन-ब-दिन अपने ज्ञान को निखारने की जरूरत होती है। और चूंकि यह पेशा है, इसलिए तरीकों और तकनीकों का दैनिक अद्यतनीकरण अनिवार्य है। मुझे लगता है कि यह

www.ignited.in

पेशे की मांग है लेकिन हमारे शिक्षक इतने कठोर हैं कि वे खुद को बदलना नहीं चाहते।[6]

- **शिक्षकों का चरित्र**

हमारे शिक्षक का चरित्र पतन की ओर जा रहा है। शिक्षक ही वह व्यक्ति है जो समाज की दिशा बदल सकता है। वह वह व्यक्ति है जो किसी भी शिक्षा प्रणाली का केंद्र बिंदु है। यह समाज के किसी भी अन्य हिस्से की तुलना में हमारे समाज को अधिक प्रभावित करता है। उपरोक्त सभी बिन्दुओं की अपेक्षा इसका प्रभाव हमारी शिक्षा पर अधिक पड़ता है। लेकिन आजकल अखबारों में अलग-अलग रूप में खबरें पढ़ने को मिलती हैं कि किसी शिक्षक ने अपनी छात्रा का अपहरण कर लिया या किसी शिक्षक ने अपनी छात्रा के साथ बलात्कार किया. और इसके चलते कई छात्रों ने अपनी स्कूली पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी. ये सभी मुद्दे और चुनौतियाँ एक दिन में नहीं उभरीं, इसमें लंबा समय लगा। यदि हम पीछे मुड़कर देखें तो प्राचीन समय में भारत शिक्षा और ज्ञान में शीर्ष पर था।

भारत में शिक्षा के लिए चुनौतियां

भारत अपनी 1.2 अरब की आबादी के बीच उल्लेखनीय विविधता वाला सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जो दुनिया की आबादी का लगभग 17% है। भारत की लगभग 70% जनसंख्या ग्रामीण है। वयस्क साक्षरता दर लगभग 60% है और महिलाओं और अल्पसंख्यकों में यह काफी कम है। भारत में शिक्षा में सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी संस्थान शामिल हैं जिनमें से लगभग 40% सरकारी हैं। 1.5% की जनसंख्या वृद्धि दर के साथ, शिक्षा प्रणाली पर किफायती मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और साक्षरता दर में सुधार करने का जबरदस्त दबाव है। भारत में शिक्षा को निम्नलिखित प्राथमिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- **गुणवत्ता**

देश भर में दस लाख से अधिक स्कूलों में शिक्षा के मानक को बनाए रखना, शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम पेश करना और दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली के साथ अच्छा संतुलन बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। स्कूल आकार और संसाधनों में भिन्न होते हैं और उन्हें छात्रों को प्रदान किए जाने वाले सर्वांगीण विकास के अवसरों में समझौता करने के लिए मजबूर किया जाता है।

- **पहुँच**

ढांचागत बाधाओं और सामाजिक मुद्दों के कारण, समाज के सभी वर्गों (महिलाओं, अल्पसंख्यकों, गरीबों) के लिए शिक्षा को सुलभ बनाना कठिन हो जाता है।

- **लागत**

शिक्षा की लागत उन लोगों और स्थानों के लिए भी बहुत अधिक है जहां यह पहुंच योग्य है। जैसे छात्रों और अभिभावकों पर प्रतिस्पर्धात्मक दबाव उन्हें स्कूली शिक्षा के पूरक के लिए निजी ट्यूशन और प्रशिक्षण का विकल्प चुनने के लिए मजबूर करता है।[7]

- **सामाजिक सांस्कृतिक**

भारत में जातीय विविधता देश भर में सतत शिक्षा को लागू करने में चुनौतियां पेश करती है। देश में 300 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं और विशिष्ट सामाजिक वर्ग के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना कठिन है। कुछ समाजों में महिलाओं को शिक्षित करना एक बड़ा मुद्दा है। गरीब परिवारों के बच्चे काम करने के लिए मजबूर होते हैं और सीखने के अवसरों से चूक जाते हैं। निरक्षर वयस्कों के पास अपने जीवन में बाद की उम्र में शिक्षित होने के बहुत सीमित अवसर होते हैं।

निष्कर्ष

हमारी दुनिया अलग है और तेजी से बदल रही है। आज हम शिक्षा के क्षेत्र में जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह यह है कि हमारे बच्चे उस "नई" दुनिया के लिए तैयार हों और यह समझें कि अनुकूलनीय और लचीले होने के लिए इन आवश्यक कौशलों का उपयोग कैसे किया जाए। उन्हें क्या करना है, इस पर विचार करने के लिए समय निकालना और फिर उनके सामने आने वाली किसी भी समस्या को हल करने के लिए सक्रिय तरीके से आगे बढ़ना महत्वपूर्ण है। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक रोमांचक समय है! हम विद्यार्थियों और शिक्षकों से उससे कहीं अधिक माँग रहे हैं जितना हमने पहले कभी नहीं माँगा था। साथ मिलकर, हम अपने बच्चों को नई दुनिया का डटकर सामना करने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास और क्षमता विकसित करने में मदद करेंगे।.

संदर्भ

1. लिंडा ला वेले (2020): 21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा के लिए चुनौतियां: तात्कालिकता, जटिलता और समयबद्धता, जर्नल ऑफ एजुकेशन फॉर टीचिंग, डीओआई: 10.1080/02607476.2019.1708621
2. जॉन जोसेफ लुपिनाची (2020) "शिक्षा में 21वीं सदी की चुनौतियों को संबोधित करते हुए" यह पत्रिका शिक्षा डॉक्टरेट पर कार्नेगी प्रोजेक्ट द्वारा समर्थित है: एडीडी (सीपीईडी) पर एक ज्ञान मंच cpedinitiative.org lmpactingedpitt.edu lSSN 2472-5889 (ऑनलाइन) खंड 2 (2017) डीओआई 10.5195/यानी.2017.31
3. डार्डर, ए. (2016)। सामाजिक न्याय के लिए महत्वपूर्ण नेतृत्व: सत्ता और विशेषाधिकार के गंदे छोटे रहस्य का खुलासा। द रेडिकल इमेजिन-नेशन: द जर्नल ऑफ़ पब्लिक पेडागॉजी, 1(1), 41-73
4. बोवर्स, सी. ए. (2013)। अतीत की गिरफ्त में. यूजीन, OR: इको-जस्टिस प्रेस
5. अमेरिकी मौसम विज्ञान सोसायटी (एएमएस)। (2012)। जलवायु परिवर्तन: अमेरिकी मौसम विज्ञान सोसायटी का एक सूचना वक्तव्य। वाशिंगटन, डीसी: https://www.ametsoc.org/ams/index.cfm/about-ams/ams-statements/statements-of-the-ams-in-force/climate-change/ से लिया गया
6. कहन, आर. (2010). गंभीर शिक्षाशास्त्र, पारिस्थितिकी साक्षरता, और ग्रहीय संकट: पारिस्थितिकी शिक्षाशास्त्र आंदोलन। न्यूयॉर्क, एनवाई: पीटर लैंग।
7. ल्यूपिनाची, जे., और हैप्पल-पार्किंस, ए. (2015)। पहचानें, विरोध करें और पुनर्गठित करें: शिक्षक शिक्षा में एक इकोक्रिटिकल ढांचा। सोजो जर्नल: शैक्षिक नींव और सामाजिक न्याय शिक्षा, 1(1)। 45-61.
8. ट्रिलिंग, बी., फ़ाडेल, सी. 21वीं सदी के कौशल: हमारे समय में जीवन के लिए सीखना। (2009)। सैन फ्रांसिस्को, सीए: जोसी-बास।
9. केलाघन, टी., ग्रेनी, वी., और मरे, टी.एस. (2009)। शैक्षिक उपलब्धि के राष्ट्रीय मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग करते हुए, 5. रिपोर्ट संख्या: आईएसबीएन 978-0-8213-7966-0। द वर्ल्ड बैंक, वाशिंगटन, डीसी
10. ली, ओ.एफ., टैन, जे.ए., और जवाल्गी, आर. (2010)। लक्ष्य अभिविन्यास और संगठनात्मक प्रतिबद्धता: नौकरी के प्रदर्शन के व्यक्तिगत अंतर भविष्यवक्ता। संगठनात्मक विश्लेषण के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 18, 129 - 150

Corresponding Author

गौतम*

सहा. प्रधयापक, लक्ष्मी नारायण, महाविद्यालय, भगवानपुर, वैशाली